ले मशाले चल पडे है

ले मशाले चल पडे है लोग मेरे गांव के,
अब अंधेरा जीत लेंगे लोग मेरे गांव के .....।।धृ।।

पूछती है झोपडी और पूछते है खेत भी,
कब तब लूटते रहेंगे लोग मेरे गांव के.....।।१।।

बिन लडे कुछ भी यहाँ मिलता नहीं ये जानकर
अब लढाई लड रहे है लोग मेरे गांव के.....।।2।।

चीखती हे हर रुकावट ठोकरोके मार से
बेडियाँ खनका रहे है लोग मेरे गांव के.....।।३।।

देखो यारो जो सुबह लगती थी फीकी आजकल
आज रंग उसमें भरेंगे लोग मेरे गांव के.....।।४।।

– दुष्यंतकुमार